हज़रत हज़रत मुहद्दिस-देक्कन –
विश्वास व शिक्षण

संसार में जब भी किसी धर्मनिष्ठ व पुण्यात्मा की आगमन होती है तो इस से पूर्व इन के आने की गवाही सुनाई जाती है जैसा के वर्षा बरसने से पूर्व ठण्डी हवाएं चलती हैं। हज़रत मुहद्दिस देक्कन की पवित्र जात से क्यों के अंधरों को छटना एवं रोशनी को फैलना, सत्य से निकटता के तलबगारों को सत्य से मिलना तथा मिलने के स्वाद से आभूषण करना लक्ष्य था। इस लिए आप के आगमन से पूर्व भी अल्लाह तआ़ला के विधि के अनुसार शुभ-समाचार सुनाई गईं।

मवाइज़ हसना से उल्लेख है

आप सम्माननीय माता फरमाती थीं के गर्भावस्था से पूर्व ही मुझे सन्त नंदन की गवाही मिल रही थीं। अर्थात आप के गर्भाशय में तशरीफ लाने से पूर्व आप के बड़े भाई का छोटे रहने में देहान्त हो चुका था जिस के कारण हज की प्रिय माता को कठिन सदमा था। इसी समय में एक मजज़ूब व्यक्ति आए तथा फरमाया के बेटी दुखी ना हो, शीघ्र प्रतिफल मिल रहा है। वह देखो आकाश की ओर तुम्हारा बच्चा आता हुआ दिखाई देता है। आप फरमाती हैं के मैं ने मुहम्मत की भावना तथा अनुभवहीनता से यह समझा के मेरा स्वर्गवासी व दिवंगत नंदन मजज़ूब व्यक्ति की दुआ से मुझे वापस मिल रहा है। जों ही मैं ने आकाश की ओर नेत्र की तो देखा के एक नुरानी दीपक उतरता हुआ मेरे घर में प्रवेश हुआ जिस की नुरानियत व तेजस्विता से नज़र की सीमा तक वायु रोशन तथा मेरी आँखें चका-चौंद हो गईं। इस के बाद ही गर्भावस्था का प्रारम्भ हुआ।

(मवाइ़ज़ हसना, जिल्द 01, पः 10)

अर्थात ज़ुबदतुल मुहद्दिसीन सैयदुल आ़रेफीन खातेमुल मुहख्खीन मुहद्दिस-देक्कन अबुल हसनात हज़रत सैय्यद अबदुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी रहमतुल्लाहि अलैह इस गवाही के केन्द्र बन कर 10 ज़ुल हिज्जा 1292 शुक्रवार के दिन सवेरे 5 बजे हैद्राबाद में जन्म हुआ तथा धन्य संयोग के इसी वर्ष 19 ज़िल हिज्जा को हज़रत शेखुल इसलाम आ़रिफ बिल्लाह इ़माम अनवारुल्लाह फारूखी बानी जामिया निज़ामिया अलैहि रहमा ने ज्ञान व प्रज्ञानता के केन्द्र जामिया निज़ामिया संस्थापित किया।

हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह का जन्म हबीब पाक से आप की सम्पूर्ण संबंध व नाता व ताल्लुक का आईनेदार है।

92 सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन नाम के अ़दार होते हैं तथा 12 दिनाक मीलाद हबीब पाक है।

अधिक ये धन्य नाम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का ही फैज़ान है के आप का इस संसार में सम्पूर्ण 92 वर्ष निवास रहा क्यों के आप का पावन देहान्त गुरुवार 8 बजे सवेरे 18 रब्बिअ़ उस सानी 1384 हिज्री में हुआ। इस से भी पवित्र जात से उच्च नाता व संबंध उजागर होती है।

हज मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी पावन जीवन का एक एक पल दर्स व प्रवचन, निर्देशन व प्रशासन के द्वारा क़ुरान व हदीस के ज्ञान के प्रचार व प्रसारण तथा सत्य धर्म की विशाल सेवाओं के लिए दे दी। दिन-रात मुरीदीन (अनुयायी व छात्रों) का नफ्स का निरीक्षण, मन की अवलोकन तथा आत्मा पर नज़र फरमाते रहे।

आप रहमतुल्लाहि अलैह ने संप्रदाय की हिदायत व मार्गदर्शन के लिए कई एक उच्च व उत्तम पुस्तकें व संग्रह लिखी हैं जो विश्वास व कर्म के बिगाड़ की समाप्ति करती है, राह हिदायत का मार्गदर्शन करती हैं।

दीप्तिमान ज्ञान को सैराब करती है। आप की पुस्तकों को पढ़ने से दिल व मन में विश्राम व शान्ति की भावना उत्पन्न होती है। एक-एक दिल में प्रभावित व सिद्ध हो कर आत्मा को कांति व चमक प्रदान करती है।

आप की हस्तलिपि व हस्तलिखित में *ज़ुजाजातुल मसाबीह* पांच जिल्दों पर आधारित है। ये हदीसों का एक विशाल संचयन व समुच्चय हैः

पहली जिल्द *किताबुल इ़मान* से *किताबुल सौम* तक है, इस में 2564 हदीसें हैं।

दूसरी जिल्द *किताबुल फ़ज़ाइल क़ुरान* से शुरु हो कर *किताबुल ताल्लुक बाब फिल नजरूर* पर समाप्त होती है। जिस में 1255 हदीसें हैं।
अहले सुन्नत के विश्वास पर स्थापित रहने का निर्देश

हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह अहले सुन्नत के विश्वास व अखीदे निष्ठा व दृढ़ता प्राप्त करने के लाभ व बरकतें तथा बदअखीदी के बुरे परिणाम से सचेत करते हुए लिखते हैं।

हज़रत इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ सानी शेख अहमद नक्षबंदी सरहिन्द रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं सालिक के लिए अवश्य है के अपने विश्वास को स्वयं अहले सुन्नत वल जमात के अनुसार श्रेष्ठ रखें ताकि परलोक व आखिरत की कृपा से सौभाग्य हों बदअ़खीदी जो अहले सुन्नत वल जमात के विरुद्ध हैं हत्या करने वाला जहर है जो हमेशां की मृत्यु तक पहुंता देती है। कर्म में आलस्य तथा अज्ञानता पर मुक्ति की उम्मीद है लेकिन विश्वास की खराबी में मुक्ति की सम्भावना व गुंजाइश ही नहीं।

(मवाइ़ज़ हसना, जिल्द 02, पः 306)

हदीस पाक में आया है कुछ लोग क़यामत के दिन पर्वत के समान नेक कर्म रखते होंगे किन्तु अखीदे में फसाद के कारण से इन के सब कर्म व आ़माल ऐसे अकारथ हो जाएंगें जैसे हवा में रेत उड़ जाती है।

(सुलूक मुजद्दिदय, पः 107)

निरादर करने से दूर रहने का उपदेश

हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने लोगों के मन व दृष्टि के ज़ाहिर व बातिन की सुधारता की, सुलूक (अल्लाह की राह पर चलना) तय करने वालों के लिए सुलूक में जो चीज़ें रुकावटें बनती हैं आप ने अपने मुरीदीन व चाहनेवालों को इस से बचाया तथा सचेत किया के उचित गुण व श्रेष्ठ शिष्टाचार से दूर रहने तथा अच्छे व भले कर्म तथा पावन शिष्टाचार को अपनाया करो। अर्थात निर्देश करते हैः बाबा! किसी का निरादर करना किसी को नीचा दिखाना, ये सालिकों के काम नहीं।

सालिकों को इन चीज़ों से जो दिल खराब करने वाली है कठिन रूप से दूर रहना चाहिए। निरादर दिल दुखाने वाली चीज़ है। हज़रत अबदुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अलैह एक बार बड़े कर व फर से कहीं जा रहे थे, रास्ते में एक दरिद्र सैय्यद जात वाले ने आप से मिल कर कहा मैं सैय्यद हुं किन्तु देखता हुं के आप का दर्जा मुझ से बुलंद है इस का क्या कारण है?

आप ने फरमायाः आप ने पूर्वज पिता सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की मीरास में प्राप्त की है इस लिए मुझे ये दर्जा मिला, तथा आप ने मेरे गुमराह व वर्जित पिता की मीरास प्राप्त की है इस कारण से ज़लील है। इसी रात आप ने सपने में सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को देखा के नाराज़ हैं। निवेदन कियाः सरकार इस नाराज़गी का क्या कारण है?

आदेश हुआ तूने मेरे पुत्र का अनादर किया है जिस से मुझे कठिन दुःख हुआ। इब्न मुबारक रहमतुल्लाहि अलैह जाग गए तथा कठिन परेशानी की स्थिति में इन सैय्यद जात की तलाश में निकले, उधन इन सैय्यद जात ने भी सपने में देखा के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि

वसल्लम फरमाते हैं अए नंदन! यदि तेरे कर्म अच्छे होते तो अबदुल्लाह तेरा अनादर ना करते। सैय्यद जात भी जाग कर हज़रत अबदुल्लाह की तलाश में निकले।

द्वार में दोनों की मुलाकात हुई, दोनों ने अपने-अपने सपने की घटना वर्णन कर के तौबा कर ली। देखो! निरादर ऐसी बुरी चीज़ है के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन हृदय को भी दुःख पहुंचाई है।

(मवाइज़ हसना, जिल्द 01, प- 109-110)

तीसरी जिल्द *किताबुल खिसास* से प्रारम्भ होती है तथा *किताबुल रौया* पर समाप्त होती है। इस में 1170 हदीसे हैं।

तौथी जिल्द का प्रारम्भ *किताबुल अदाब* से होता है तथा समाप्ति *किताबुल फतन बाब बदा अल खलक़* पर होता है, जिस के हदीसों की संख्या 1093 है।

पांचवी जिल्द का प्रारम्भ *बाब फ़ज़ाइल सैयदुल मुरसलीन सलवातुल्लाह वसल्लामु अलैह वाला वसहाबी अजमईन* से है तथा ये जिल्द *बाब सवाब हज़ाह अलाह* पर सम्पूर्ण होती हैं। इस में 552 हदीसें हैं। पांच जिल्दों में आधारित कुल हदीसों की संख्या लगभग 6634 है।

ज़ुजाजातुल मसाबीह फन हदीस का ऐसा कारनामा है, जिस की अवश्यकता व महत्व दिन-रात रोज़ाना उजागर हो रही है।

ज़ुजाजातुल मसाबीह लिख कर हज़रत सैयदी मुहद्दिस-देक्कन अलैहि रहमा ने ना केवल अहनाफ बल्कि कुल संप्रदाय मुसलिमों पर बडी कृपा की, धर्म के विद्वानों व तरीक़त के मशाइक़ के साथ विशेष रूप से जनता भी इस पावन पुस्तक से लाभ उठा रही है तथा शरीअ़त के मसले को सर्वेश्रेष्ट ढंग से समझने के लिए इस को दीपक बनाती है।

जहाँ आप ने ज्ञानी क्षेत्र पर ये कृपा की वहीं जनता के मार्गदर्शन तथा इमान पर निष्ठा के साथ रहने के लिए उर्दू भाषा में कई सीमित व लाभदायक रचना लिखी हैं। जिनके द्वारा आप ने सुधारता प्रकट, उचित विश्वास, बातिन की उन्नति का वह कारनामा परिणाम किया, जिसकी द्वारा आज तक लाखों लोगों के दिल अल्लाह अल्लाह के ज़िक्र में डूबे हुए हैं तथा हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की याद में मस्त व मग्न हैं। आप की धन्य रचना के से चंद जवाहिर पारे सुधारता व विश्वास व कर्म की कारण पेश करने की कृपा प्राप्त की जा रही है।

अहले सुन्नत के विश्वास पर स्थापित रहने का निर्देश

हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह अहले सुन्नत के विश्वास व अखीदे निष्ठा व दृढ़ता प्राप्त करने के लाभ व बरकतें तथा बदअखीदी के बुरे परिणाम से सचेत करते हुए लिखते हैं।

हज़रत इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ सानी शेख अहमद नक्षबंदी सरहिन्द रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं सालिक के लिए अवश्य है के अपने विश्वास को स्वयं अहले सुन्नत वल जमात के अनुसार श्रेष्ठ रखें ताकि परलोक व आखिरत की कृपा से सौभाग्य हों बदअ़खीदी जो अहले सुन्नत वल जमात के विरुद्ध हैं हत्या करने वाला जहर है जो हमेशां की मृत्यु तक पहुंता देती है। कर्म में आलस्य तथा अज्ञानता पर मुक्ति की उम्मीद है लेकिन विश्वास की खराबी में मुक्ति की सम्भावना व गुंजाइश ही नहीं।

(मवाइ़ज़ हसना, जिल्द 02, पः 306)

हदीस पाक में आया है कुछ लोग क़यामत के दिन पर्वत के समान नेक कर्म रखते होंगे किन्तु अखीदे में फसाद के कारण से इन के सब कर्म व आ़माल ऐसे अकारथ हो जाएंगें जैसे हवा में रेत उड़ जाती है।

(सुलूक मुजद्दिदय, पः 107)

निरादर करने से दूर रहने का उपदेश

हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने लोगों के मन व दृष्टि के ज़ाहिर व बातिन की सुधारता की, सुलूक (अल्लाह की राह पर चलना) तय करने वालों के लिए सुलूक में जो चीज़ें रुकावटें बनती हैं आप ने अपने मुरीदीन व चाहनेवालों को इस से बचाया तथा सचेत किया के उचित गुण व श्रेष्ठ शिष्टाचार से दूर रहने तथा अच्छे व भले कर्म तथा पावन शिष्टाचार को अपनाया करो। अर्थात निर्देश करते हैः बाबा! किसी का निरादर करना किसी को नीचा दिखाना, ये सालिकों के काम नहीं।

सालिकों को इन चीज़ों से जो दिल खराब करने वाली है कठिन रूप से दूर रहना चाहिए। निरादर दिल दुखाने वाली चीज़ है। हज़रत अबदुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अलैह एक बार बड़े कर व फर से कहीं जा रहे थे, रास्ते में एक दरिद्र सैय्यद जात वाले ने आप से मिल कर कहा मैं सैय्यद हुं किन्तु देखता हुं के आप का दर्जा मुझ से बुलंद है इस का क्या कारण है?

आप ने फरमायाः आप ने पूर्वज पिता सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की मीरास में प्राप्त की है इस लिए मुझे ये दर्जा मिला, तथा आप ने मेरे गुमराह व वर्जित पिता की मीरास प्राप्त की है इस कारण से ज़लील है। इसी रात आप ने सपने में सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को देखा के नाराज़ हैं। निवेदन कियाः सरकार इस नाराज़गी का क्या कारण है?

आदेश हुआ तूने मेरे पुत्र का अनादर किया है जिस से मुझे कठिन दुःख हुआ। इब्न मुबारक रहमतुल्लाहि अलैह जाग गए तथा कठिन परेशानी की स्थिति में इन सैय्यद जात की तलाश में निकले, उधन इन सैय्यद जात ने भी सपने में देखा के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं अए नंदन! यदि तेरे कर्म अच्छे होते तो अबदुल्लाह

तेरा अनादर ना करते। सैय्यद जात भी जाग कर हज़रत अबदुल्लाह की तलाश में निकले।

द्वार में दोनों की मुलाकात हुई, दोनों ने अपने-अपने सपने की घटना वर्णन कर के तौबा कर ली। देखो! निरादर ऐसी बुरी चीज़ है के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन हृदय को भी दुःख पहुंचाई है।

(मवाइज़ हसना, जिल्द 01, प- 109-110)

बदअ़खीदा लोगों की संगत तथा इन की पुस्तकों को पढ़ने से बचने का उपदेश

सैयदी मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह अपने धन्य प्रवचन में बुरे खात्मे के कारण वर्णन करते हुए आदेश फरमाते है- मेरे मित्र! खात्मा खराब होने का एक कारण ये भी है के आज-कल अनोखे हंगामें हैं एक फितने है कोई कुछ कह रहा है तो कोई कुछ कह रहा है इस का कुछ विचार व ध्यान नहीं के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम क्या फरमाए तथा सहाबा किराम क्या फरमाए थे की कुछ चिन्ता नहीं अपने जो जी में आया कहना शुरु कर दिया के मेरे दोस्तो ! कहीं बुरे विश्वास व सोंच में ना फंसो ऐसी पुस्तकें मत देखो, ऐसी संगत में मत बैठो यही विश्वास यदि कल मृत्यु के समय आ गए तो पछतावा करोगे।

अतः जब विश्वास असली स्थिति में सामने आएंगें तो इस समय पछताओगे के ऐसे विश्वास ना रखता तो अच्छा था। वैसे मय मृत्यु आएगी तो खात्मा खराब हो जाएगा।

(फज़ाइल रमज़ान, पः 186)

संप्रदाय सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की कृपा व उपकार

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के संप्रदाय पर बेशुमार उपकार व कृपा हैं इसी प्रकार संप्रदाय पर आप के बहुत से अधिकार हैं। हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह इस सिलसिले में लिखते हुए 3 बडे तथा महत्व अधिकार वर्णन करते हैं।

प्रकटन ये है के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की जो कृपा व उपकार तथा परोपकार संप्रदाय की स्थिति पर है इस के अनुसार से हज़रत के इस प्रकार अधिकार संप्रदाय की गरदन पर हैं के क़यामत तक संप्रदाय व उम्मत हज़रत के अधिकार को संपादन कर के मुक्त नहीं हो सकते।

हज़रत सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के हम पर हज़ारो अधिकार हैं। इन में 3 बड़े अधिकार हैं, तथा अधिकार को तो संप्रदाय क्या संपादन करती यदि इन 3 अधिकार को भी संपदान कर तो ग़नीमत है साहिबो! आप सोंचो के आप इन तीनों में कौन से अधिकार को संपादन कर रहे हैं-

(1)- प्रथम अधिकार आज्ञापालन करना।

(2)- दूसरा अधिकार आप का सम्मान करना तथा आदर करना है।

(3)- तीसरी अधिकार आप की मुहब्बत रखना है।

(क़यामतनामाः पः 139)

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम- ज़ाहिर व बातिन प्रत्येक ओर से नूर ही नूर हैं

इस विषय से संबंधित हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने क़ुरान व हदीस से इ़मान प्रोत्साहक बहस लिखी हैः-

भाषांतरः- निस्संदेह हम ने भेजा है आप को साक्षी तथा शुब सूचना देनेवाला, तथा डरानेवाला एवं अल्लाह की अनुज्ञा से उसकी ओर बुलानेवाला और प्रकाशमान प्रदीप बनाकर।

(सुरह अल-अह़ज़ाबः 33:45-46)

भाषांतरः- तुम्हारे पास अल्लाह तआ़ला की ओर से प्रकाश व नूर (मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) तथा एक स्पष्ट पुस्तक (क़ुरान करीम) आ गई है।

(सुरह अल-माइदाः 05:15)

इस आयत में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को *नूरुल्लाह* इस लिए फरमाया के नूर इच्छा तथा इच्छुक के बीच दीदार का द्वार होता है सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम भी अल्लाह एवं अल्लाह वालों के बीच के वास्ते हैं। अल्लाह तआ़ला ने नूर खुदा इस लिए भी कहा है के नूर के मज़हर (यथा अल्लाह तआ़ला का नूर) हुज़ूर ही हैं।

अल्लाह तआ़ला का नूर सम्पूर्ण रूप से हुज़ूर से स्पष्ट होने के विस्तार दूसरे पैगम्बर भी अल्लाह तआ़ला के नूर से दीप्तिमान थे परन्तु वह पैगम्बर अल्लाह तआ़ला के नूर के पूरे मज़हर व केन्द्र नहीं थे यही कारण थी के इन से मार्गदर्शन भी केवल विशेष-विशेष क़ौम व संप्रदाय तथा विशेष देश को हुई है।

ह़ज़रत सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के नूर के सम्पूर्ण केन्द्र व मज़हर (मज़हर-आतुम) थे इस लिए पूर्ण मार्गदर्शन हुई। संसार के कोने-कोने में मार्गदर्शन व हिदायत पहुंच गई ये आप- खुदा के नूर के केन्द्र होने की एकमात्र दलील है।

भाषांतरः- उसके प्रकाश की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक़ है, जिसमें एक चिराग़ (दीपक) है- वह चिराग़ एक फ़ानूस में है।

(सुरह अन-नूरः 24:35)

अल्लाह तआ़ला का आदेश है के हमारे नूर से सर्व आकाश तथा सर्व धरती प्रकाश हैं परन्तु कोई मज़हर-आतुम (अल्लाह का नूर) इस नूर का ना हुआ। हमारे नूर के मज़हार-आतुम यदि देखना हो तो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को देखो, आप के धन्य सीने में हमारा नूर सम्पूर्ण रूप से जो प्रकाश किया है इस को एक उदाहरण से इस प्रकार समझ के।

एक ताक़ में चिराग़ व दीपक हैं तथा वह चिराग़ फ़ानूस में रहने से बहुत प्रकाश है तथा इस चिराग़ का तेल ज़ैतून का होने से इस चिराग़ के नूर में गुण उत्पन्न हो गई है।

इस उदाहरण के बाद सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की धन्य सीने के नूर पर ध्यान करें जिस प्रकार चिराग़ के ताक़ में रहने तथा इस में श्रेष्ठतर तेल का कारण से सम्पूर्ण स्तर का नूर प्रकट होता है इसी प्रकार अल्लाह तआ़ला का नूर हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पवित्र सीने में प्रकट व स्पष्ट हो कर उच्च स्तर को पहुंचा, इसी के स्पष्टीकरण में अल्लाह तआ़ला का आदेस है।

भाषांतरः- क्या हमने आप के लिए आप का सीना (ज्ञान व हिकमत व प्रज्ञानते के नूर के लिए) नहीं खोल दिया।

(सुरह इन शरहः 94:01)

आदेश होता है के हम अपना सम्पूर्ण तथा पूर्ण नूर आप के धन्य सीने में ड़ाल दिए जिस का परिणाम है आप का सीना सम्पूर्ण रूप से दीप्तिमान हो कर शरह सद्र हो गया।

नूरे मुसतफा का साया नहीं

नूर को साया नहीं होता क्यों के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ज़ाहिर व बातिन प्रत्येक रूप से नूर ही नूर थे। इस लिए सरकार को भी साया ना था (जैसा के क़साइस कुबरा में है)।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के धन्य नूर से सदा ज़ाहिरन व बातिनन दीप्तिमान हुए बातिनी रूप से तो क़यामत तक ऑलिया किराम तथा माननीय विद्वान दीप्तिमान होते रहेंगे ज़ाहिरन जो हज़ारो चीज़ें रोशन हुएं इन के कुछ उदाहरण दर्शन करें-

जैसा के बुखारी शरीफ की हदीस हैः-

भाषांतरः- दो सहाबी इ़शां की नमाज़ पढ़ कर हज़रत के पास से गुज़रने लगे, इस समय बदल था तथा अंधेरा था सरकार ने एक खजूर की लकड़ी एक सहाबी के हाथ में दिए वह लकड़ी चमकने लगी। जिस से रास्ता नज़र आता था। जब वह दोनों लोग एक दूसरे से जुदा होने लगे तो वे इस लकड़ी से दूसरे हाबी अपनी लकड़ी मिलाए वह लकड़ी भी दीप्तिमान व रोशन हो गई, इसी रोशनी व प्रकाश में प्रत्येक पने अपने घर पहुंच गए।.

ये था रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के नूर से ज़ाहिरी (बाहर) चीज़ों का दीप्तिमान होना इसी प्रकार बैहखी की हदीस में वर्णन है कुछ सहाबा फरमाते हैं के एक रात हम हज़रत सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पास से गुज़रते हुए वह रात अंधेरी थीं सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के फैज़ान से हमारी अंगुलियां दीप्तिमान हो गईं एवं हम इस रोशनी में विश्राम से अपने अपने घर पहुंच गए।

ये है हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के नूर से प्रकट व स्पष्ट चीज़ का दीप्तिमान व प्रफुल्ल होना।

और एक हदीस में वर्णन है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम इसलाम के निमन्त्रण के लिए कुछ सहाबा को भेजा तो वह सहाबा अनुरोध किए के इसलाम सत्य धर्म होने पर क्या दलील पेश करें।

तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इन के दोनों आँखों के बीच में अंगुलि रख दिए। जिस से इन के दोनों आँखों के बीच से नूर चमकने लगा। सहाबा किराम इस नूर से अपना कोडा मिला लिए तो कोडा भी इस नूर से चमकने लगा। ये है रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का नूर जो एक दूसरे को बदल रहा था।

(मीलादनामा, पः 130-132)

मीलाद की रात- क़द्र की रात से उत्तम है

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के नाते से लोग व सदस्य प्रत्येक चीज़ को उत्तमता तथा बढ़ाई प्रदान की है आप जिस महीने में, जिस रात तथा जिस समय इस विश्व में प्रकट हुए अल्लाह तआ़ला ने इस को उत्तमता तथा प्रफुल्लित बना दिया।

अर्थात मीलाद की रात सर्व रातों से यहाँ तक के क़द्र की रात से भी उच्च व उत्तम है। हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने मीलादनामा में में इस पर दलीलों से बहस करते हुए फरमाते हैः

साहिबो! समस्त भाग्यवान व पवित्र रातों में सब से उच्च क़द्र की रात है, आप को मालूम है के इस का ये स्तर क्यों है?

भाषांतरः- क़द्री की रात फ़रिश्तों तथा रूह हर महत्वपूर्ण मामले में अपने रब की अनुमति से उतरते हैं। (सुरह अल-क़द्रः 97:04)

जिस रात खुद हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की आगमन हुई है इस का क्या स्तर हो तो पूछते हो। हज़रत के जन्म

की रात क़द्र की रात से इस लिए उच्च व श्रेष्ठतर है के क़द्र की रात केवल रहमत है मोमिनों के लिए विशेष मोमिन को ही लाभ पहुंचता है मीलाद की रात रहमत है सम्पूर्ण विश्व व आलम के लिए।

भाषांतरः- और अए पैगम्बर हम ने आप को सारे संसारों के लिए सर्वथा रहमत व दयालुता बनाकर भेजा है।

(सुरह अल अंबियाः 21:107)
क़द्र की रात से विशेष लाभ पहुंचता है तथा मीलाद की रात से सामान्य व आम लाभ पहुंचता है। इसी लिए मीलाद की रात सम्पूर्ण रातों से उच्च व सर्वश्रेष्ठ है अब शायत व सम्भावित आप को ये संदेह हो रहा होगा के क़द्र की रात में एक रात की इ़बादत का पुण्य व सवाब हज़ार महीनों की इ़बादत से श्रेष्ठतर है।

भाषांतरः- हमने क़ुरान क़द्र की रात (अर्थात गौरव प्राप्त रात्रि) में अवतरित किया।

(सुरह अल-क़द्रः 97:01)

मीलाद की रात में ना कोई विशेष इ़बादत है एवं ना इ़बादत का कोई पुण्य व सवाब अधिक मिलना साबित है, फिर कैसे मीलाद की रात क़द्र की रात से उच्च व श्रेष्ठतर होगी।

मेरे मित्र! आप ने ग़ौर नहीं किया राजाओं के पास का सिद्धान्त है के दरबार के समय नौकरों व कर्मचारियों को हमेशा से अधिक नौकरी करना पढ़ता है और दिनों के प्रबन्ध से अधिक प्रबन्ध करना पढ़ता है इश के बाद कहीं धनीकरण होता है।

इस के विरुद्ध इस के जब राजाओं के जन्म का होता है साधारण छुट्टी दी जाती है बिना किसी सेवा के धनीकरण व संबोधित किया जाता है, उपहारें बटते हैं।

मित्रो! क़द्र की रात दरबार की रात है सम्पूर्ण रात जागो तो संबोधित होते हैं मीलाद की रात राजाओं के जन्म की रात के प्रकार है इस में सामान्य छुट्टी है। ना रात को जागने की अवश्यकता ना कोई इ़बादत करने की, बिना किसी सेवा के धनीकरण व आभूषण होते हैं।

(मीलादनामा, पः 82-83)

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम अदृष्ट की बातें बतलाते हैं-

अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को प्रत्येक प्रकार का ज्ञान प्रदान किया है। क़यामत तक क्या-क्या घटना घटित होने वाले हैं आप सम्पूर्ण विस्तार के साथ इस का ज्ञान रखते हैं।

पुल सिरात के मैदान, मीज़ान की स्थिति, जन्नत व दोज़ख के दृश्य लोगों में कौन सा व्यक्ति जन्नत में प्रवेश होगा एवं कौन नरक व दोज़ख में जाएगा इन के पिता-दादा के नाम तथा क़बीलों के नाम के साथ जानते हैं परन्तु कुछ लोग क़ुरान की एक आयत के हवाले से कहते हैं के इस आयत में अदृष्ट का ज्ञान का तात्पर्य व परिभाषा कर दिया गया व अदृष्ट का ज्ञानः-

भाषांतरः- तथा यदि मैं अदृष्ट व ग़ैब जानता होता तो बहुत सा कुशल प्राप्त कर लेता एवं मुझे तकलीफ ना पहुंचती इस के सिवा नहीं के मैं इमान वालों को ड़राने वाला तथा शुभ समाचार देने वाला हुं। (सुरह अल आ़राफ)

हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह इसी धन्य आयत को वर्णन फरमाने के बाद इस का तात्पर्य बतलाते हुए अदृष्ट के ज्ञान पर किए जाने वाले विरोध का उत्तर तथा परोक्ष व अदृष्ट के ज्ञान के सबूत के लिए

पावन जीवन को दलील घोषित देते हैं तथा उदाहरण के रूप में माननीय आयत में से एक धन्य आयत भी वर्णन फरमाते हैं।

परोक्ष व अदृष्ट का ज्ञान दो प्रकार के हैः एक तो ये के अल्लाह तआ़ला मालूम करवाते हैं, जिस के कारण जो सूचना साधारण लोगों को मालूम नहीं होती वह सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को मालूम हो जाती थी।

दूसरे ये घटना के एक मुनाफिख (कपटी) सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की धन्य सेवा में उपस्थित हो कर निवेदन कियाः मेरा ऊंट गुम हो गया है। जाओ फलां ओर देखो मिल जाएगा। इस ने बार-बार पूछते हुए कहा के आप को आकाशों की बातें बतलाते हैं एवं प को मेरे ऊंट की सूचना नहीं। आप ने फरमायाः देख फलां स्थान पर वृक्ष के नीचे बंधा हुआ है जा और इस को ले आ! वह मुनाफिख गया तथा अनुदेश के अनुसार इस स्थान पर इस का ऊंट पाया गया।

क्या ये परोक्ष व अदृष्ट का ज्ञान नहीं तो और क्या है। परन्तु ये अदृष्ट का ज्ञान अल्लाह तआ़ला की ओर से है एवं यदि कोई व्यक्ति ये कहे के बिना अल्लाह तआ़ला बतलाए हुए आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) को अदृष्ट की स्थिति मालूम हो जाती है वह उचित नहीं है एवं ऊपर लिखी हुई आयत में ऐसे ही परोक्ष का ज्ञान का इन्कार है। यदि आप की पावन जीवन को देखा जाए तो सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से कैसी-कैसी बातें स्पष्ट हुई है इस की आशंका हो सकेगा एवं उनतीसवां पारा सुरह जिन्न दूसरे रुकू की आयतः-

(भाषांतरः- जिन पैगम्बरों को पसंद फरमाए तो इन को परोक्ष की बातें बतला देते हैं।)

जिस में अल्लाह तआ़ला ने आदेश फरमाया है इस अनुसार से प्रत्येक अवश्यकता पर आप को परोक्ष का ज्ञान की स्थिति मालूम हो जाती थी। इस की उपस्थिति में फिर आप के अदृष्ट व परोक्ष के ज्ञान को बहस में

लाना (जो मालूम है इसी बात को मालूम करने की कोशिश) है जो बिल्कुल छूटी है। इस के बावजूद जो लोग सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को अपनी आँखों से देख कर आप को अपने जैसा मनुष्य समझते हैं ये उचित नहीं है।

जो सिद्दीखों ने देखी है वह सूरत है मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वस्ललम) की

हाँ यदि वह लोग अल्लाह तआ़ला के बतलाए हुए तरीक़े से सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को देखते तो मालूम हो जाता है के आप किस स्थान तथा कैसे बुलंद स्तर व स्थान पर संबोधित हैं जब ही तो कहा गया है के आप की प्रशंसा व गुणगान आप के योग्य शान के असम्भव ही है परिमित ये के अल्लाह तआ़ला के बाद आप ही का दर्जा है।

(मवाइज़ हसना, जिल्द 02, पः 312-313)

मृत्यु व जीवन का सुशिक्षित अनुसंधान

अल्लाह तआ़ला ने प्रत्येक सजीव व जीवित के लिए मृत्यु स्थापित की है आदेस है- प्रत्येक जीव को मृत्यु का स्वाद चखनेवाला है। (सुरह आले-इ़मरानः 03:185) इस आयत के हवाले से शुहदा किराम व अंबिया इ़ज़ाम के जीवन पर वार्तालाप की जाती है हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह मृत्यु की सच्चाई एवं जीवन का तात्पर्य स्पष्ट और प्रतिभाशाली अंदाज़ में वर्णन करते हैं।

“मृत्यु देहान्त का नाम है आत्मा एक शरीर को छोड़ कर दूसरे शरीर में ग़ुस जाती है ये ऐसा ही है जैसा के दो पिंजरे हैं एवं पक्षी एक है दोनों पिंजरों के दरवाज़े खोल कर इन के मुंह मिला देते हैं तो पक्षी एक पिंजरे से दूसरे पिंजरे में जाता है। आलम-बरज़क़ में इसी शरीर खाकी के हू

बहू एक दुसरा शरीर भी तैयार किया गया है, अंतर ये है के शरीर खाकी कसीफ होता है तथा बरज़क़ का शरीर तलीफ व स्वादिष्ट होता है।"

(शहादतनामा, पः 56)

मृत्यु तथा जीवन का तात्पर्य बतलाने के बाद शहीदों की जावन तथा अल्लाह के वरदानों से संबोधित व आभूषण होने को हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह इस प्रकार वर्णन करते हैं।

शरीर खाकी में जैसे कर्म के द्वारा से उन्नति करते हुए शहीद बरज़क़ के तलीफ शरीर में जाने के बाद भी वैसे ही बदसुतूर उन्नति करते एवं खाते पीते भी रहते हैं इसी लिए कहा जाता है के शहीद जीवित हैं इन का जीवन भी कुछ फरज़ी नहीं, संदेह नहीं स्पष्टीकरण वह जीवित हैं जीवन के सारे आसार उपलब्ध हैं।

भाषांतरः- अपने खुदा के पास इस के रिस्ख खाते पीते तथा आनन्द मनाते हैं। (सुरह आले-इमरानः 02:169)

उच्च जीव में प्रत्येक प्रकार के स्वाद एवं विश्राम प्राप्त कर रहे हैं जहाँ चाहे गल गश्त करते हैं। हरित पक्षियों के कथन में रह कर ऐसी ही सैर करते हैं जैसा के हम आज कल विमान (हवाई जहाज़) में सैर किया करते हैं।

(शहादतनामा, पः 57)

सरकार का कोई प्रतिरूप व समान नहीं, हयातुन नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की उत्कृष्ट बहस

इस के बाद सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बाद पावन देहान्त धन्य जीवन के बेमिसाल व अद्वितीय वर्णन करते हैं तथा मुस्लिम संप्रदाय को सामान्यतः, अपने मुरीदीनक विशेष रूप से इस विश्वास की मार्गदर्शन करते हैं के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम का ना कोई उदाहरण व मिसाल आया है ना आ सकता है इस को इमान की शर्त बना लेने में ही लोक व परलोक की सलामती है।

परन्तु बरज़क़ में कोई ऐसा मधुर शररी नहीं था जो आप की पावन आत्मा के योग्य हो, इस कारण से के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की नज़ीर ना संसार में है ना बरज़क़ के आलम में एवं ना आखिरत (परलोक) में। जब बरज़क़ के आलम में ऐसा मधुर शरीर नहीं रहा तो फिर इसी शरीर खाकी में पावन आत्मा को वापिस कर दिया गया तथा मैं ऐसा मधुर सरीर नहीं रहा तो फिर इसी शरीर खाकी में आत्मा को वापस कर दिया तथा रसलू अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का यही पावन शरीर इस आलम से बरज़क़ के आलम में बदल गया एवं इसी कारण से आप को हयातुल अंबिया सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कहते हैं के आप इसी शरीर खाकी के साथ बरज़क़ के आलम में तशरीफ हैं क्यों के साधारण मनुष्यों एवं शहीदों की आत्माएं बरज़क़ के आलम में दूसरे मधुर शरीरों में बदले हुए हैं इस लिए इन से शरीर खाकी को लवाज़िम (अनिवार्यता) भी टूट गए हैं इन की पत्नियों से विवाह किया जा सकता है इन की सम्पत्ति बांटी जा सकती है। इसके विरुद्ध क्यों के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वस्ललम का यही खाकी शरीर बरज़क़ में बदल गया है तथा आप के खाकी के शरीर के लवाज़मात बदले नहीं हुए हैं इस लिए पावन पत्नियों से आप के बाद विवाह करना हराम घोषित किया गया एवं आप की मीरास बांटी नहीं गई।

यदि ऐसा किया जाता तो अनिवार्य आता के जीवित की पत्नी से विवाह किया गया, तथा जीवित का धन बांटा हुआ, बरज़क़ के विश्व व आलम के शरीर में जो स्वाद व मज़ा पाया जाता है वह मधुरता सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के इस खाकी शरीर में बद्र *जिहाज़ाद* उपलब्ध थी।

फिर ये बरज़क़ के आलम में आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) के लिए लतीफ शरीर की क्या अवश्यकता? जैसे बरज़क़ के आलम के शरीर को साया नहीं होता, ऐसे ही आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) के पावन शरीर को साया ना था।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का धन्य आदेश है जैसे मैं सामने से देखता हुं वैसे पीछे से भी देखता हुं, क्या कभी आप ने किसी कसीफ शरीर को देखा है के वह सामने की प्रकार पीछे से भी देखता हो ये तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पवित्र शरीर ही की लताफत व मधुरता थी के आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) के सामने की प्रकार पीछे से भी देखा करते।

आप सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के इस संसार के शरीर के लतीफ व मुधर होने पर मेअ़राज शरीप की घटना भी दलील देती है कोई कसीफ शरीर ऐसा नहीं पहुंच सकता जैसा मेअ़राज में आप का लतीफ व मधुर शरीर कहां से कहां पहुंच गया।

कोई मुसलमान कहीं हो, जब वह हज़रत सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम पर सलाम भेजता है तो पावन आत्मा जो बरज़क़ के आलम में दृश्य मलकूत की प्रकार ध्यान रहती है एवं अल्लाह तआ़ला के मुशाहिदे में व्यस्त है सलाम का उत्तर देने के लिए पावन आत्मा को वर्णन स्थिति से ऐसा ही सचेत होता है जैसे संसार में वही के समय मलकूत के आलम की ओर व्यस्त होती थी एवं वही समाप्त होने के बाद फिर आप इस संसार व विश्व की ओर ध्यान करते थे।

इस से मालूम हुआ के हदीस पाक में *रद्दुल्लाह अ़लैया रूही* जो वर्णन है इस में रद्दुरूह से पावन आत्मा का शरीर स निकलना एवं सलाम के समय शरीर की ओर आना तात्पर्य नहीं बल्कि पवित्र आत्मा पर लौट आना तात्पर्य है यदि पावन आत्मा का शरीर से निकलना एवं फिर शरीर में प्रवेश होना तात्पर्य होता तो हदीस पाक में *रद्दुल्लाह अलैया रूही* क

बजाए *रद्दुल्लाह अलै जिसमी रूही* अनुदेश किया जाता यथा मेरी आत्मा को मरे शरीर की ओर लौटाया जाता है।

जब ऐसा नहीं फरमाया गया बल्कि ये फरमाया गयाः आत्मा (रूह) मेरी (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ओर लौट आती है, तो इस का यही अर्थ व परिभाषा हुआ के मुझे इस आलम से उस आलम की ओर सचेत होता है एवं सलाम करने वाले के सलाम का उत्तर देता हुँ।

(शहादतनामा, पः 57-59)

खलील का स्थान व हबीब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की शान

ज़ुबदतुल मुहद्दिसीन खात्मुल मुहक़्क़ीन अबुल हसनात सैय्यद अबदुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 05, पः 12-13 पर जामेअ़ तिरमीज़ी एवं सुनन दारमी से हदीस पाक वर्णन की एवं हाशिय पर इस हदीस पाक की शरह व निर्वचन के प्रति मिरखात के हवाले से लिखते हैः

भाषांतरः- जान लो के खलील तथा हबीब के बीच अंतर ये है के *खलील* खलत से है, जिस का अर्थ अवश्यकता व अनिवार्यता के है तो हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम का स्तर (एहतियाज) अल्लाह तआ़ला की ओर है। इस कारण से अल्लाह तआ़ला ने इन्हें खलील बनाया एवं हबीब अर्थ व परिभाषा के अर्थ में है तो आप मुहिब (मुहब्बत करने वाले) तथा महबूब व प्रिय हैं।

खलील वह है जो महबूब व प्रिय की ओर अपनी अवश्यकत के कारण से मुहब्बत व प्रेम करे एवं हबीब वह है जो किसी उद्देश्य के बिना मुहब्बत व प्रेम करे।

उद्देश्य ये है के खलील इच्छा करने वाले, सालिक, मुरीद के स्तर में है तथा हबीब मुराद है तथा मतलूब के स्तर में है। जिन्हें इच्छा किया जाता है।

भाषांतरः- और अल्लाह तआ़ला अपनी ओर (आने की) राह व द्वार दिखाता है (प्रत्येक) इस को जो (अल्लाह तआ़ला की ओर) दिल से रुजू करता है।

इसी लिए कहा गयाः *खलील* का कर्म अल्लाह तआ़ला की प्रसन्नता के लिए होता है तथा हबीब की प्रतिभा ये है के इन की प्रसन्नता के लिए अल्लाह तआ़ला आदेश करता है।

अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः

भाषांतरः- तो हम अवश्य आप को इस क़िबले की ओर फेर देंगे जिस से आप सन्तुष्ट बहैं।

(सुरह अल बक़रहाः 02:144)

अधिक अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और शीघ्र आप का रब आप को इतना प्रदान करेगा के आप सन्तुष्ट हो जाएंगे।

लवा ---

हज़रत मुहद्दिस देक्कन ने ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 05, पः 14/15 में जामेअ़ तिरमिज़ी से हदीस पाक वर्णित की हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने निर्देश किया मैं क़ियामत के दिन आदम अलैहिस सलाम की औलाद का सरदार

हुं कोई गर्व नहीं, मेरे हाथ हम्द व प्रशंसा का झण्डा है कोई गर्व नहीं, इस दिन आदम तथा उन के सिवा सम्पूर्ण पैगम्बर मेरे झण्डे प्रति होंगे तथा सब से प्रथम मैं ही अपने पावन रौज़े से बाहर आऊँगा कोई गर्व नहीं।

इस हदीस पाक की व्याख्या कतरे हुए ज़ुजाजा के हाशिय में लिखते हैः-

भाषांतरः- अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों के स्थान व स्तर से कोई स्थान, हम्द के स्तर से ऊँचा नहीं तथा सम्पूर्ण स्थान व स्तर इस के नीचे ही समाप्त हो जाते हैं एवं पैगम्बरों के सरदार संसार व परलोक में सम्पूर्ण निर्माण में सर्व अधिक हम्द व प्रशंसा करने वाले हमारे नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को ही हम्द का झण्डा प्रदान किया जाएदगा तो प्रथम व अंतिम आप के झण्ड़े की पना लेंगे तथा इसी ओर सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के इस अनुदेश में संकेत है "आदम अलैहिस सलाम तथा इन के सिवा सब मेरे झण्डे के प्रति हैं" इसी कारण से अल्लाह तआ़ला ने अपनी पुस्तक का प्रारम्भ हम्द से किया तथा अपना नाम हम्द से किया तो आप ही को मुहम्मद (जिन की हमेशा खूब-खूब प्रशंसा की जाती है) तथा अहमद (अधिक हम्द व प्रशंसा करने वाले) से प्रतीक किया गया।

क़ियामत के दिन आप को महमूद के पद पर बिठाया जाएगा एवं इस स्थान में आप पर अल्लाह तआ़ला की वह प्रशंसा तथा हम्द के खज़ाने खोले जाएंगे जो ना आप से पूर्व किसी पर खोले गए एवं ना आप के बाद किसी पर खोले जाएंगें।

ऑलिया अल्लाह के स्मारक चिह्न की बरकतें

ऑलिया अल्लाह व धर्म के पूर्वजों व पुण्यात्मा के आसार व स्मारक चिह्न से बरकत प्राप्त करने के बारे में कुछ लोग वार्तालाप करते हैं तथा कहते हैं के ऑलिया अल्लाह के वस्त्र का सम्मान व आदरम किया जाता है इस से क्या लाभ होने वाला है?

सोंच-विचार में उत्पन्न हो कर दिल को उलझन का केन्द्र बनाने वाले इन जैसे विचार का हज़रत सैयदी मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने अत्यन्त सरल व आसान बात में स्पष्ट किया है अर्थात सुरह यूसुफ की तफसीर में आयत के प्रतिः

भाषांतरः- फिर जब शुभ सूचना देनेवाला आया तो उसने उस कुर्ते को उसके मुँह पर डाल दिया एवं तत्क्षण उसकी नेत्र-ज्योति लौट आई।

(सुरह अल यूसुफः 12:96)

इस आय के प्रति धर्म के पूर्वजों के वस्त्र तथा अन्य आसार (कुटुम्बी) से बरकत प्राप्त होने पर दलील करते हुए लिखते हैं-

साथियो! वस्त्र की संगत का ये प्रभाव है तो वस्त्र वाले की संगत का क्या प्रभाव होगा इस को खुद समझ लीजिए। इस आयत से ऑलिया अल्लाह की तथा नेकों (भले व धर्मनिष्ठ) की संगत का लाभदायक होना मालूम हुआ।

नव शिक्षित युवक लोग अधिकता से तथा पुराने लोगों में *वहाबी लोग* ऑलिया अल्लाह के वस्त्र की बरकत का इनकार करते हैं।

इस आयत से मालूम हुआ के इन का विचार गलत है ऑलिया अल्लाह के वस्त्र की बरकत का इनकार नहीं हो सकता है-

हदीसः- रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी को अपना वस्त्र प्रदान किया था उन्हों ने इस को अपने कफन के वास्ते रखा था तथा वसीयत की थी के इस को मेरे कफन में शरीक करना।

हदीसः- एक बार हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अपने धन्य सर के बाल बांटें थे जिस को सहाबा किराम

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने बड़े सम्मान तथा प्रबन्ध से सुरक्षित रखा था।

एक साहब का अनुभव है इन को एक पूर्वज व बुज़ुर्ग ने छींट का झुब्बा दिया था कहते हैं जब भी इस को पहनता तो जब तक शरीर पर रहता किसी छोटे पाप का वसवसा व विचार तक ना आता था पूर्व तो मैं इस को संयोग से ऐसा कर्म समझा किन्तु जब बार-बार पहन्ने के बाद विश्वास हो गया के ये इस वस्त्र की बरकत है।

(तफसीर सुरह यूसुफ, पः 285)

ऑलिया अल्लाह से विरोध पर अल्लाह तऑला की युद्ध की घोषणा

ऑलिया अल्लाह के प्रिय बन्दे व उसके दरबार के अतिप्रिय होते हैं अल्लाह तऑला ये गवारा नहीं करता के कोई व्यक्ति इन्हें किसी प्रकार की तकलीफ पहुंचाए या इन की प्रतिभा व शान में अनुचित शब्द कहे।

अल्लाह तऑला ऑलिया किराम को तकलीफ देने वालों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करता है। जैसा के हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह वियालत के स्तर तथा ऑलिया अल्लाह के प्रकार वर्णन करने के बाद हदीसे-खुदसी के हवाले से फरमाते हैं-

"मैं मेरे दोस्त को हानी व तकलीफ पहुंचाने वाले के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करता हुँ कभी अल्लाह तऑला अपने मित्रों व दोस्तों की परीक्षा इन को विरोधियों तथा शत्रुओं के द्वारा लेत हैं। किन्तु फिर बहुत शीघ्र विरोधियों पर यातना प्रकट होने लगता है, ये ना समझो के हम ने बुज़ुर्गों का विरोध किया परन्तु हमारा कुछ ना बिगड़ा, ऑलिया अल्लाह को सताना कभी खाली नहीं जाता।"

(अल्लाह तऑला का हिल्म (नीति) तेरे साथ नरमी का मामला करता है परन्तु जब तो हद से बढ़ जाता है तो फिर तुझे वह रुसवा कर देता है।)

(मवाइज़ हसना, जिल्द 01, पः 54/55)

ऑलिया अल्लाह के निरादर से खात्मा खराब होता है

हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने ऑलिया अल्लाह के दरबारों में जाने वाले रास्ते व द्वार का भी निरादर व अनादर करने पर कठिन चेतावनी की तथा बुरे खात्मे से ड़राया अर्थात कहते हैः

मेरे दोस्तो! एक और कारण बतलाता हुँ के जिस से खात्मा खराब होता है। सुनो! ऑलिया अल्लाह के साथ निरादर व अनादर कनरे से भी खात्मा खराब होता है।

याद रखो! आज कल ये भी आरम्भ हो गया है के ऑलिया अल्लाह के साथ बड़ी असभ्यता व निरादर हो रहा है मालूम नहीं इन का खात्मा कैसा होता है।

एक व्यक्ति ने मुझ से कहा हज़रत यूसुफ साहब तथा शरीफ साहब के दरबार के सामने जो सड़क है इस पर भी गुज़रना नहीं चाहिए भीतर दरबार में जाना तो बुरा है ही इस सड़क पर चलना भी बुरा है।

अफसोस-अफसोस! ऑलिया अल्लाह की ये इज्जत है आप के पास अल्लाह तआ़ला के दोस्तों व मित्र के साथ ये मामला है। ये स्थिति है तो तब क्या स्थिति होगी आप की, सोंच लो इस को याद रखो कभी ऐसा रास्ता व मार्ग नहीं अपनाना।

(फज़ाइल रमज़ान, पः 189)

ऑलिया अल्लाह का वसीला लेना एवं इन से मदद मांगना

कम ज्ञान के कारण से कुछ लोग ऑलिया अल्लाह का वसीला लेने तथा इन से मदद व सहायता मांगने को नाजाइज़ तथा शिर्क कहते हैं। हज़रत सैयदी मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह इस पर अति प्रभावित

तरीक में इमान व आत्मा को मोह लेने वाली बहस की है, अर्थात हज़रत क़िबला लिखते हैः-

"विश्व व दुनिया असबाब का आलम है, हर बात माध्यम व साधन से मालूम तथा प्राप्त होती है, यदि माध्यम व साधन को शिर्क घोषित करं तो जीवन कठिन हो जाएगा। उदाहरण के रूप में आरम्भ में कर्मचारी के प्राप्त के लिए आप को कहाँ-कहाँ भटकना पड़ता है तथा अनेक प्रकार की कोशिशें अवश्य होती हैं, यदि आप इन माध्यम व साधन को शिर्क समझ कर परीक्षा व कोशिश ना करें तो जीवन भर कर्मचारी व नौकरी नहीं मिल सकती तथा ना कोई काम सम्पूर्ण हो सकता है।"

दूसरी ये है के किसी व्यक्ति से आप की कोई अवश्यकता पूर्ण हो सकती है तथा आप अजनबी रूप से इस व्यक्ति के पास जाएं, तो वे आप से सीधे मुंह बात करेगा ना आप का काम करेगा। यदि इस व्यक्ति के मित्र तथा साथी को आप के साथ ले जाएं एवं इस से सिफारिश करवाएं तो आप का कार्य आसानी व सरलता हो सकता है तथा वह व्यक्ति अपने मित्र की सिफारिश के कारण आप से ऐसी ही हमदर्दी एवं आप की मदद व सहायता करेगा जैसे किसी पुराने मित्र से करते हैं।

ये एक सांसारिक उदाहरण था परन्तु बात समझ में आ गई होगी के बिना साधन व माध्यम व वसीले अपना कार्य आसानी व सरलता से निकलना कठिन है।

इसी प्रकार प्रत्येक कर्म व कार्य पर नज़र करें तो मालूम होता है के वह एक माध्यम से सम्पूर्ण पाता है फिर वास्ता या वसीले को नाजाइज़ या शिर्क कहना कितनी नादानी व मुर्खता है।

यही स्थिति ऑलिया अल्लाह से मदद मांगने का भी है के वह अपने जीवन, अल्लाह तआ़ला के प्रावधान व अहकाम तथा सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की धन्य सुन्नत के आधार तथा

अल्लाह की याद में गुज़ार ने से अल्लाह तआ़ला के प्रिय व स्वीकृत के स्तर व दर्जे पर संबोधित हो चुके हैं।

पावन देहान्त के बाद भी इन की स्वीकृत व प्रिय स्तर में कोई अंतर नहीं आता जिस प्रकार जीवन में अल्लाह तआ़ला के बन्दों के लिए दुआ किया करते थे, देहान्त के बाद भी करते हैं तथा अल्लाह तआ़ला हमारे लिए इन की दुआएं स्वीकार कर लेते हैं, इस में क्या बुराई है मालूम नहीं?

ये सब अंतर व विरोध इमाम की कमज़ोरी तथा अल्लाह तआ़ला को ख्याली विचार करने से हैं। हाँ यदि इन को उपलब्ध व उपस्थित समझते एवं इन को पाने के लिए इन के बतलाए हुए मार्ग व रास्ते पर रहते तो इन विषय की उलझन में ना पड़ते सब से बड़ी गलती तो ये है के हम ने इन के ज़िक्र को भुला दिया है।

ज़िक्र वह हैं जिन के द्वारा अल्लाह तआ़ला को उपस्थित पाना एवं अपने मामला का कारसाज़ समझना कठिन ना होता। इन ही परिश्रमों के कारण से मुशाहिदा करना भाग्य में होता तो ऐसे विरोध के लिए ज़बान ना खुलती। ये सब ऑलिया अल्लाह की संगत के कारण से है यदि इन की धन्य व पावन संगत उपलब्ध आती एवं इन के साथ कुछ समय जीवन का बिताते तो खुद ही मालूम हो जाता के अल्लाह तआ़ला की सम्पूर्ण प्रकृति से कैसे-कैसे कार्य बन रहे हैं। तथा इस पूर्ण प्रकृति के साथ हमारा क्या संबंध है किसी बुज़ुर्ग ने क्या ही अच्छी बात कही हैः-

भाषांतरः- अल्लाह तआ़ला के विशेष बन्दे अल्लाह तआ़ला नहीं, किन्तु अल्लाह तआ़ला से जुदा भी नहीं है।

(मवाइज़ हसना, जिल्द 02, पः 65/66)

निष्कर्ष रूप से हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह के पावन देहान्त से संबंधि मुरख्खअ़ हसनात, पः 61-62 से एक चीज़ पेश है-

हज़रत क़िबले ने भी पालन के अनुसार जब नमाज़ की इखामत हुई तो (अपने जानशीन, बड़े शहज़ादे सैयदी व मुरशिदी हज़रत) मौलाना सैयद खलील उल्लाह शाह साहब क़िबले को आगे बढ़ा दिया।

तथा खुद अपनी अंतिम नमाज़ रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पालन में अपने खलीफा के साथ बैठ कर संपादन की। फिर हज़रत क़िबले मसजिद ना आ सके यहाँ तक के आप रहमतुल्लाहि अलैह संसार से परदा हो गए।

हज़रत क़िबला ने भी अपने धन्य जीवन को अबुल बशर हज़रत आदम अलैहिस सलाम के प्रकार शुक्रवार ही से आरम्भ किया तथा शुक्रवार को समाप्त किया इस प्रकार के आप का जन्म का दिवस शुक्रवार है तथा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इस आदेश के अनुसार के लहद मोमिन के लि जन्नत की कियारी है आप को शुक्रवार ही के दिन लहद के भेजा गया।

हज़रत क़िबला ने अपने पावन जीवन में शुक्रवार को जो महत्व दिया था वह किसी से छिपा नहीं है। सत्य तो ये है के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के पालन में आप भी शुक्रवार की तैयारी गुरूवार ही से आरम्भ कर देते थे।

इस की बरकत के सांसारिक विषय, परलोक व आखिरत की यात्रा में भी काम आ गया अर्थात आप ने अपनी अंतिम यात्रा गुरूवार ही से आरम्भ किया विश्राम से सम्पूर्ण लाखों परवानों को दर्शन से संबोधित किया।

फिर स्नान करने के एवं वस्त्र को बदल कर अंतिम बार सुगन्धित हो कर जब आप की सवारी के दोश पर चली है तो कितना अनोखा पावन संयोग है के आप को अपनी लहद (जन्नत की कियारी) में ठीक इस समय प्रवेश किया जा रहा था जिस समय के आप दिनचर्य के अनुसार मक्का मसजिद में ज़ुमआ व शुक्रवार की नमाज़ के लिए प्रवेश हुआ करते थे।

(मुरख्खअ़ अनवार, पः 62)

लेखकः मौलाना मुफती हाफिज़ सैयद ज़ियाउद्दीन नक्षबंदी खादरी, महाध्यापक, धर्मशास्त्र, जामिया निज़ामिया, प्रवर्तक-संचालक, अबुल हसनात इसलामिक रीसर्च सेन्टर।